मनुष्य बनो

नवम्बर
१९८१

प्रेरणा गति

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

संरक्षक
दयाल फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूंपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३२	मार्गशीर्ष सं० २०३८ वि० नवम्बर १९८१	संख्या १

मनमत

महर्षि शिवव्रतलाल बर्मन

मन के मन में अपने मन को, जब लगाओगे कभी ।
आयेगी उसकी समझ, और ज्ञान पाओगे कभी ॥१॥

मान का है मान वह, और सार का वह सार है ।
उसको जो समझे तो, भवसागर से बेड़ा पार है ॥२॥

ज्ञानी को अभिमान मिथ्या, हो रहा है ज्ञान का ।
वह विषय क्या है भला, इस ज्ञान का अभिमान का ॥३॥

ज्ञानी मन की गम नहीं, बुद्धि कहाँ जाती नहीं ।
भेद उस अनजान, अनजाने का वह पाती नहीं ॥४॥

करलो सतसंग कुछ दिनों, गुरु का तो आये कुछ समझ ।
राधास्वामी की दया से, दास पाये कुछ समझ ॥५॥

—•—

नाम

दुर्गादास 'चमन'

रे साधो, नाम गति है न्यारी ।
पहले अपना जीवन देखो जिसमें करनी होगी ।
संस्कार को भुगत ले प्यारे जीवन हो जाए रोगी ।।
रे साधो —

काम, क्रोध, मोह लोभ, अहंकारा पांच चोर हैं राजा ।
योगी, जती, साधु सन्यासी सबको है इन फांसा ।।
रे साधो—

बाहिर का सब भुगत ले अन्दर शब्द कमाई ।
जिसने भेद यह जाना नाहीं उसने मुँह की खाई ।।
रे साधो—

सत्संग की महिमा है उत्तम, सत्संग ऊँचा मानो ।
परम पुरुष का कर के सत्संग शब्द को तुम पहचानो ।
रे साधो—

सत्संग, सतगुरु सतनाम को सत्य में रहकर जानो
देखो, सुनो गुनो फिर उसको बात हमारी मानो ।।
रे साधो—

सत्संग में आलस है कैसा, बात यह सबसे खोटी ।
आंख मुँह जो सुनेगा सत को बुद्धि उससे रूठी ।।
रे साधो—

सत्संग द्वारा सतगुरु जानो, नाम गहो फिर प्यारे ।
शब्द नाम की करके भक्ति हो जाओगे न्यारे ।।
रे साधो—

शब्द है सतगुरु नाम है ऊपर यह बात सच्ची जानो ।
शब्द ज्ञान को पक्का करता, शब्द ज्ञान पहचानो ।।

रे साधो, नाम गति है न्यारी।
सार शब्द है ज्ञान का दाता, नाम अशब्द है भाई।
परम दयाल की कृपा से समझ यह सारी आई ।।
रे साधो, नाम गति है न्यारी।

—×—

कुण्डली

दुर्गादास 'चमन'

बहिर फिर फिर बाबरे खोया जीवन सार।
खोया जीवन सार, तुझे कुछ हाथ न आया।
ढूढ़े तीर्थ धाम राम को ढूढ़ न पाया।
मन्दिर मस्जिद लाख प्रभु उनमें नहीं पाया।
शब्द पढ़े बे अन्त गीत सब मन से गाया।
वेद पुराण के बीच प्रभु मुझे दृष्टि न आया।
सन्त हुए जब दयाल तो घट में दर्शन पाया।
सतसंग सुन निर्बन्ध का हो जायेगा पार।
बाहिर फिर फिर बाबरे खोया जीवन सार।

—×—

शोक समाचार

दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज की 'दयाल की माई' श्रीमती भाग्यवती देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री गोपाल नारायण राय निवासी ग्राम मुबारकपुर जिला गाजीपुर का चोला दि० १-११-८१ को छूट गया।

हम समस्त भाई बहिन दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं तथा उनकी आत्मा की शान्ति की कामना करते हैं।

—एडीटर 'मनुष्य बनो'

दस लक्षण का अंग

'अक्रोध वैराग्य जितेन्द्रियत्वं ।
क्षमा दया भाव सर्वम् प्रीयत्वं ।।
निर्लोभ दाता भय शोक रहिता ।
ज्ञानस्य चिन्हं दस लक्षणानि ।।

र्थ—क्रोध न हो । वैराग हो । इन्द्रियां वस में रहें । क्षमा हो । दया हो । के साथ प्रेम भाव हो । लालच न हो । दान में प्रवृति हो । न मन में भय । और न शोक रहे । वह ज्ञान के चिन्ह हैं और दस लक्षण हैं ।

क्रोध न हो

दुख सागर यह जगत है, चहुं दिशि लागी आग ।
पिंगल गुरु की शरन ले, आग छोड़कर भाग ।।१।।
क्रोध न कबहूँ कीजिये, क्रोध पाप का मूल ।
पिंगल क्रोधी नित सहे, भय चिन्ता दुख सूल ।।२।।
क्रोध अग्नि हृदय बसे, जले रुधिर नित चाम ।
पिंगल क्रोध को त्याग दे, ले ले गुरु का नाम ।।३।।
क्रोधी अपना शत्रु है, औरन से करे बैर ।
पिंगल क्रोध को त्याग दे, कर दुनिया की सैर ।।४।।
हृदय कभी न दुखाइये, बचन क्रोध का बोल ।
पिंगल क्रोध को त्याग दे, मीठी बानी बोल ।।५।।
रोग भोग और सोग की, क्रोध में सबकी खान ।
पिंगल क्रोध को त्याग दे, सतगुरु बचन प्रमान ।।६।।
सहन शक्ति सुशीलता, हिये विवेक विचार ।
पिंगल क्रोध को त्याग दे, अपना आपा मार ।।७।।
हानी है अति क्रोध से, क्रोध में है उत्पात ।
पिंगल क्रोध को त्याग दे, सुन सतगुरु की बात ।।८।।

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

चिन्तल बस्ती हैदराबाद

राधास्वामी !

मैं यह काम क्यों करता हूँ ? मेरा जन्म साधारण हिन्दू ब्राह्मण के घर हुआ था। मगर मौज मालिक की इच्छा या मेरे कर्म व मेरा भाग्य मुझे एक दृश्य द्वारा १९०५ में दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी के चरणों में लेगई। दृश्य में उन्होंने मुझे पता दिया। उस पते पर १० मास में उनको पत्र लिखता रहा। एक लिफाफा प्रत्येक रविवार को लिखता परन्तु उत्तर कोई नहीं आया। १० मास बाद उन्होंने मुझे उत्तर दिया। फकीर ! मैं तेरे विचारों की कदर करता हूँ। मैंने वास्तविकता, सत्यता और सच्चाई राधास्वामी मत में हजूर मुअल्ला मुकद्दस राय साहिब सालिगरामजी की जात-पाक से प्राप्त की है। अगर तुमको इस राधास्वामी मत पर चलने से इन्कार न हो तो तुम लाहौर आकर मुझ से मिल सकते हो। यह पत्र ५४ पत्र लिखने के बाद था। उस समय मैंने समझा कि राधा-स्वामी मत राधा या कृष्ण से सम्बन्धित कोई मत होगा। मुझे क्या पता था कि मैं कहाँ जाऊँगा। जब उनके चरणों में गया तो उन्होंने यह सार वचन, कविता मेरे सामने रख दी। मैंने जब पढ़ा उसमें सबका खण्डन किया हुआ था। सिवाय संतमत के सभी गुमराह है। सन्तों की वाणियों को पढ़ो। राम भी काल के अवतार, कृष्ण भी

काल को अवतार, व्यास जी भी नहीं पहुँचे, वसिष्ठ जी भी नहीं पहुँचे। मैं पराशर की सन्तान हूं। पराशर जी भी भूल गये, और बेदान्ती भी भूल गये और सूफी भी भूल गये। दिल को चोट लगी। सोचा कि मैं कहां फँस गया। दिमाग चक्कर पड़ गया। मैं, रो पड़ा दाता ने कहा—क्या हुआ ? मैंने कहा—महाराज ! खण्डन है। कहने लगे-अच्छा, छोड़ दो। कोई समय ऐसा आयेगा जब तुम समझोगे कि यह क्या लिखा हुआ है। वह बड़ी सूझ-बूझ से मेरे पहले सनातन धर्म के विचार को दूर करके मुझे इस गुरुमत या सतसंग की ओर लगाया। इस शब्द में वह मुझे लिखते हैं—

फकीरा ! सोच समझ पग धार
बिनु समझे कोई सार न पावे, भटके बारम्बार,
ज्ञान पशु की क्या करूँ निन्दा, वह ग्रन्थन की लार।
जड़ चेतन की गाँठ न खोले, उरझ उरझ रहा हार,
भक्ति पशु बन्धन नहिं काटे बूड़ा कालीधार।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सेवक हुआ पार।

सन्तमत का खण्डन तो मेरे लिये दुख का कारण था। इसलिए उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा बनकर चलूँगा ो कुछ मेरा अनुभव होगा मैं संसार को बता जाऊँगा। यह काम रना मेरा कर्मभोग है। दूसरे दाता दयाल ने मेरे जिम्मे तीन **Duties** लगाई थी। निबल, अबल जीवों की सहायता करना, गत का कल्याण करना और ३ जीवों को भवसागर से पार लगाना ी कारण मैं यह कार्य करता हूँ।

इस समय गुरुमत का जोर है। जब ब्राह्मणों का राज्य था ह्मणों को अभिमान था। ब्राह्मणों की बड़ी प्रशंसा होती थी तथा दान-दक्षिणा थी वह ब्राह्मणों को ही मिलती थी तथा उनका ा सम्मान था। मुसलमानों का जोर हुआ तो वहाँ काजियों की डी चढ़ी, ज्ञानियों का जोर हुआ तो ज्ञानियों का बोल वाला,

हुआ। बुद्धमत का जोर हुआ तो भिक्षुकों का बोलवाला हुआ। अब यह संतमत का जोर है। तुम देखो संसार में कितने गुरु हैं। प्रत्येक पंथ व मत के यहां अलग अलग गुरू हैं। हंसा गुरू, निरंकारी गुरु, राधास्वामी गुरु, फलां गुरू, फलां गुरू, क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। इसलिए कहता हूँ कि गुरुमत क्या है ? गो मेरा सतसंग बहुत ऊँचा है। मगर मैं अपना कर्म भोगता हूँ।

मैंने संसार में अपने आपको सन्त सतगुरु कह कर प्रकट किया है। किसी ने आज तक ऐसा नहीं कहा। मगर मैंने यह कहा। दुनिया मुझे अहंकारी समझती है। मगर यह सत्यता है। सतगुरु सच्चे ज्ञान हकीकत और भेद का नाम है। वह मैं देता हूँ। जो मैंने समझा और मेरा दाता दयालजी ने कहा मैं वो बताना चाहता हूँ कि जिस गुरुमत के नाम पर इस समय भिन्न-भिन्न गुरुमत चल रहे हैं। वह क्या है ? और उन्होंने गुरुमत को नहीं समझा इसलिये लोग गुरुमत में शामिल हुए गुरु पशु बने हुए हैं। दाता दयाल की वाणी हैं—

साधो, गुरु का रूप लखाऊँ,
जो कोई आबे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ।
सत रज तम के जग से, बाहिर गुरु मूर्ति दरसाऊँ,
निर्गुण सगुण देह नहिं जाके ओवत भेद बताऊँ।
हाड़ मांस नाड़ी नहिं जाके वाके रूप न नाऊँ।
सब का सब में सब से न्यारा, मरम विचित्र बताऊँ।
रूप अरूप सरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, पल पल गुरु गुन गाऊँ।

मुझे इस असली गुरु के रूप का पता नहीं लगता था। मैं तो बाहर में दाता दयाल के साथ लगा हुआ उनके चरणों से प्रेम करता था और आरती गाता था। जब गुरु के वास्तविक रूप का मुझे पता

नहीं लगता था तो इसका पता देने के लिए दाता ने मुझे १९२८ में यह काम दिया था और कहा था कि तुमको सच्चा सतगुरु राधास्वामी दयाल सतसंगियों के रूप में मिलेगा और भेद देकर तुमको असली और सच्चे घर पहुँचा देगा। क्योंकि उनकी आज्ञा थी इसलिये काम कर रहा हूँ वरना मेरी कोई और उद्देश्य नहीं। मेरा कर्तव्य है कि सच्चाई व हकीकत और गुरुमत को साफ कर जाऊँ ताकि अधिकारी इससे लाभ उठा सके।

आप लोग हनमकुण्डे गये। वहाँ दाता का **statue** था वहां आपने आरती गाई। कोई मन्दिर में जाता है, वहाँ आरती गाता है। क्या यह गलत है ? गलत भी है और नहीं भी। नहीं इसलिये कि जैसे हम अपने बच्चे को स्कूल भेजते हैं वहां हम उनको कागज, पेंसिल, कलम दे देते हैं। मास्टर उनको क, ख, ग लिखना सिखाता है। तो जब तक आदमी बचपन की हालत में है उस समय यह मूर्ति भी सच्ची है, पंथ भी सच्चा है। बाकी काम जो हम करते हैं वह सच्चे हैं। मगर यदि एक लड़का सारा जीवन स्कूल में जाता है और केवल मास्टर से ही प्रेम व मास्टर की ही चापलूसी करता है या किताबों को ही पलटता मत्था टेकता और फूल चढ़ाता रहे क्या वह विद्या सीख सकता है ? क्या उसको विद्या आजाएगी। केवल ही यह मूर्ति पूजा, सत्संग और पाठ की किताबें आवश्यक हैं। पर सत्संगी लोग तो सारा जीवन गुरु पशु हुए गुरु की मूर्ति या गुरु की वाणी या और बातों में ही उलझे रहते हैं। परिणाम यह होता है कि उनको प्रत्येक वस्तु नहीं मिलती। जिस उद्देश्य के लिए मत बनाया गया है उनका वह उद्देश्य पूरा नहीं होता। मगर भक्ति है जिसने असली गुरुमूर्ति देखली जिसका इस शब्द में कहा है तो उसका क्या कर्तव्य है ? अगर वह यह कहे कि मूर्ति-पूजा खराब मत करो। किताबें मत पढ़ो यह मत करो तो वह मूर्ख क्यों ? क्योंकि यह सुरतियाँ हैं। जब तक एक व्यक्ति इन सुर-

तियों से नहीं गुजरेगा तो वह कैसे समझदार होगा। बाद में वह क्या करता रहे, वह बच्चों के साथ बच्चा बन कर खेलता है। जिस तरह तुम बाबा हो या तुम बाप हो। बच्चों का प्रसन्न करके पहले उनके साथ गेंद बल्ला खेलते हो कि नहीं खेलते। इसलिए मैं न तो किसी का खण्डन करता हूँ न मण्डन करता हूँ वल्कि सत्यता बताता हूँ कि यह सुरतियाँ हैं दर्जे हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न-भिन्न संस्कारों से गुजर रहा है। कोई मूर्ति पूजा करता है, कोई दान करता है, कोई पुन्य करता है, कोई कुछ करता है। अपनी अपनी जगह सभी चीजें आवश्यक हैं मगर सारा जीवन गुरुमत की गलत समझ मूर्ख वन कर लूटना या मूर्ति पूजा में ही फँसे रहना और अंत समय में हाथ झाड़ कर इस संसार से चले जाना यह भी मूर्खता है। इसलिए आज संसार को मैं यह बताना चाहता हूं कि वास्तव में गुरु मत क्या है ? दाता दयाल फ़रमाते हैं—

साधो, गुरु का रूप लखाऊँ।

मुझे अपने इस असली गुरु के रूप का पता नहीं लगता था कि वह असली रूप क्या है ? सत रज तम की हद से बाहर गुरु मूर्ति दरसाऊँ।

सतो गुण रजो गुण और तमोगुण यह क्या है ? सतो गुण तुम्हारे शुद्ध पवित्र भाव हैं, रजोगुण तुम्हारे मन की चंवलता है तमोगुण तुम्हारी मूढ़ता है। वह कहते हैं कि गुरु का रूप इससे परे है। तुम्हारे अन्दर जो किसी गुरू का रूप प्रकट होता है वह भी गुरु रूप नहीं है। वह तो तुम्हारे अपने मन के विश्वास का रूप है।

निर्गुण सगुण देह नहिं जाके, अदभुत भेद जताऊँ

तुम मालिक या गुरू के रूप को वना लेते हो यह सगुण है और रूप नहीं नाते और अपने ख्याल से प्रेम करते हो वह निर्गुण है। वह कहते हैं कि वह इससे परे है। तो वह परे क्या हुआ ? यह वह अपने अनुभव से जान सकता है। जो साधन करके अपने शरीर को

ग यानी शारीरिक senses को अनुभव नहीं करेगा, मानसिक ारों और प्रकाश को छोड़ेगा क्योंकि प्रकाश और नूर भी तो ल रखता है कि नहीं रखता है ? इससे परे कौन है जो वस्तु से परे है वह गुरु का रूप है। जब तुम अभ्यास करते हो, शरीर भूलते हो, रूप-रंग को भूलते हो प्रकाश को छोड़ जाते हो तो : गुरु का रूप कौन हुआ ? तुम्हारे अन्तर में वह जो वस्तु है जो के ख्यालात की साक्षी है प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती ही सतगुरु का रूप है। तो फिर गुरु कौन हुआ। ऐ इन्सान ! तुम्हारी अपनी जात है, वह तुम हो। मूलचन्द ! तुम आते हो, । करते हो। मैं तुम्हारी आँखों में धूल झोंक कर अपना उल्लू ा नहीं करना चाहता। वह गुरु तुम्हारी अपनी जात है। तुम ागे कि इसका सबूत क्या है ? इसका सबूत दाता की वाणी सुनो भी यही कहते हैं। तुम्हारा अपना रूप गुरु है—

राधास्वामी निज स्वरूप, गोता मार तन ले कूप,
होजा सुख रस।

ी में आया है—

को खुश करना है भारी, गुरु प्रसन्न तो काल कर्म नारी तस तरी ऐसे-ऐसे शब्द है। काल समय को कहते हैं और कर्म जो हमारे ार गति होती है उसको कर्म कहते हैं। यह मन को काल कहते । तुम्हारा मन काल का अंश है और उसमें संकल्प उठाते हैं वो क्या है ? वो कर्म हैं। बाहरी गुरु को रुपया देकर प्रसन्न कर सकते हो मगर रुपया देने से तुम्हारे न कर्म की बाजी नहीं हटेगी। फिर वह असली गुरु कौन हुआ ? गुरु तुम्हारा अपना self जो साक्षी है। गुरु को प्रसन्न करना ा है ? अपने आपको चिन्ता में न लाना, चिन्ता ग्रस्त न करना, न्ता व गम न करना, दुख अनुभव न करना, लालच में न आना, न में न पड़ना और गैर की पूजा नहीं करना इस अवस्था में राहत

का नाम ही गुरु को प्रसन्न करना है। जिसने आप का ज्ञान प्राप्त कर लिया कि मैं न शरीर, न मन और न प्रकाश हूँ बल्कि मैं अलख अपार अनामी जात हूँ। ऊपर काल कर्म की बाजी प्रभाव नहीं डालती। वह काल यानी मन के चक्कर व ख्याल में फँसा था वह नहीं फँसा जो किसी गुरु का रूप बनाता है वह इसके अपने मन का ही रूप है। तुम मुहम्मद साहिब, हजरतअली जैसस क्राईस्ट, राम या कृष्ण को पूजते हो। जिसके बाजी हो ? जो तुम्हारे अन्दर हजरत अली, मुहम्मद या फकीरचन्द समक्ष आता है। वह कौन है ? वह तुम्हारा अपना मन है और जो अपने मन की पूजा करता है वह काल मत का पुजारी है। मगर कालमत से निकलने और उस गुरु तक पहुँचने का क्या तरीका है –

गुरु खोजो री जगमें, दुर्लभ रत्न यही।

गुरु की तलाश करो। मगर तुम तो उसको गुरु करते हो जिसके २५०० चेले हैं या उसको गुरू मानते हो जिसका रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है।

गुरु खोजो री जग में, दुर्लभ रत्न यहीं।

गुरु की तलाश करो। वह तलाश क्या है ? अपनी हस्ती का मुतायला करना तलाश करने का तरीका है। हमारा **self** कहीं शान्ति चाहता है कुछ तस्कीन चाहता है। इससे जो भी कर्म करते हो उसका अपने जीवन के अनुभव से लाभ उठाओ और जहां देखो कि यहां मुझे शान्ति नहीं मिलती उसको छोड़ कर दूसरी जगह जाओ।

एक ख्याल को छोड़ कर दूसरा ख्याल लो। अगर तुम में यह हालत है तो **Demand and supply** के अनुसार तुमको कोई न कोई हस्ती मिल जाएगी और वह प्रकृति तुम को ऐसी जगह ले आएगी यहां तुम्हारा काम पूर्ण होगा। परन्तु इस मंजिल तक पहुँचना आसान नहीं है और यह निज गृह तक पहुँचने का मार्ग सब

ां के लिए नहीं है । यह निज घर पहुँचने का मार्ग—

नानक कोटिन में कोऊ, नारायण अब चेत ।

ीता में भी लिखा है कि हजारों आदमियों में से कोई एक निकलता है, लाखों भक्तों में से कोई एक ज्ञानी निकलता है, ं ज्ञानियों में से कोई एक भेद को समझने वाला गहरमेराज है । मैंने यह सत्यता क्यों बताई ? ताकि अगर शिक्षित व्यक्ति ब़ात को समझे तो इस समय में अज्ञान की लूट से बच जाये । त सतगुरु हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं अनामी धाम से फकीर ले में आया हूँ । ऐसा क्यों कहता हूँ ? जो जहाँ से आता है ो वहीं की लगन होती है । मछली पानी से निकलती है पानी ई है और वह पानी की ही तलाश करती है । जो जीव जिस ा आया है उसको उस वस्तु की इच्छा व लगन होती है । हम विकता की ओर जाना चाहते हैं कि मेरा वास्तव क्या है । क मुझे तलाश और लगन थी कि मेरा आदि घर कहाँ है, मैं हूं और कहां से आया हूँ ? मेरा वह राम कहां है जहाँ से मैं हूँ या असली गुरू व वह आदि घर किस जगह है यहाँ से मैं हूँ । इसलिए मैं कहता हूँ कि मैं अनामीधाम से आया हूँ । जब ता को गुरु मान पूजता था तो जो कुछ मैं कह रहा हूँ यही दयाल मुझे भी इशारे में समझाते थे । मगर इशारे की मुझे नहीं आती थी । उन्होंने किसी को धोखा नहीं दिया । यह होंने कहीं भी नहीं कहा कि मैं गुरू हूँ । वह तो कहते हैं कि ारी संगत में आओ तो मैं तुमको गुरू का वास्तविक रूप बता ; । एक शब्द में वह मुझे लिखते हैं—

फकीरा गुरु तो तेरे पास,
त्याग भ्रम बिचार मन का, छोड़ जगत की आस
आस कर गुरु चरन की, सब से होय निराश ।

ो आदमी गुरु के पास जाकर जगह जगह मांगते हैं क्या उनके

लिए यह पंथ है ? वह तो मुझे जगत की आशा छोड़ने को कहते हैं। इसलिए जब तक कोई व्यक्ति इस सांसारिक आशाओं का त्याग नहीं करेगा उसका तो फलक भी अपने घर में नहीं जा सकता। हम जितने गुरुमत में शामिल हुये हुए हैं यह केवल होद लगाकर शहीदों में दाखिल हुए हैं। हम अधिकारी नहीं हैं क्योंकि हम अधिकारी नहीं है इसलिए सन्त जिस-जिस प्रकृति वाला व्यक्ति उनके पास आता है वह उसकी मनोकामना को पूर्ण करने के लिए अपनी युक्ति बता देते हैं कि भई, तू ऐसा कर तुझे पुत्र भी मिल जायगा, दौलत भी मिल जाएगी। इसलिए सन्तमत बिल्कुल भिन्न वस्तु है और दुनिया का धर्म बिल्कुल अद्वितीय चीज है। मैं बहुत समझता हूँ कि मैं ऊँचा बोल रहा हूँ। क्यों ? क्योंकि जब से मैं होशियारपुर से चला हूँ भिन्न भिन्न स्थानों से मुझे लगभग ५-६ हजार रुपया आप सत्संगी लोगों से मिला। अगर मैं यह सत्यता ब्यान नहीं करता तो वो जो रुपया मैं ले जाता हूँ आप तो में खाता नहीं मन्दिर में दूँगा तो मन्दिर वाले जो इस पैसे को खायेंगे उनका मन कभी शुद्ध पवित्र नहीं हो सकता। क्योंकि मैंने तुम लोगों से जो रुपया लिया है और वहां खर्च करूँगा उसमें मैंने तुम लोगों को धोखा दिया है। मेरे मन्दिर में जो रहते हैं मैं उनकी सेवा करता हूँ। मैं उनको जहर नहीं खिलाना चाहता अब इस स्पष्ट कहने से मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। जिसका मन चाहे मुझे दे जिसका मन चाहता है मुझे न दे। जिसका मन चाहता हो मेरी किताव पढ़ें जिसका मन चाहता है मेरी किताब न पढ़े मैं कोई ठेकेदार तो नहीं। मैं तो सिपाही हूँ। दाता ने कहा था फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना अतः मैंने स्वयं जो अनुभव किया उसको कहा। मुझे यह दावा भी नहीं है कि मैं जो कुछ कहता हूँ सत्य है। मेरे अपने जीवन का अनुभव है। मैंने बड़े-बड़े सन्तों के हाल देखे। आखिर मैं उनकी क्या हाल होगा। पता नहीं कल को मेरा क्या हाल होगा। मुझे क्या

ा इसलिए मैं डर गया हूँ और अपनी नीयत को साफ रख कर
नी जात को साफ करने के लिए काम करता हूँ। तुम लोग मेरा
दर करते हो अगर मैं यह सच्ची बात तुम लोगों को नहीं बताता
र तुम लोगों को अँधेरे में रख कर अपनी पूजा आप कराना चाहता
तो जो रुपया मैं ले चला हूँ यह तो मुझे खाजाएगा। **I'll got, I'll ent** अतः अपनी जान को बचाने के लिएमैं यह साफ व्यानी कराता
। मेरी नीयत साफ है। इसलिए मैं बिल्कुल सफाई से बात करता हूँ।
ाप लोग आते हैं आपको वताना चाहता हूँ कि असली और सच्चा
त्गुरु जो है वह तुम्हारी जो अपनी जात है जो वास्तव में तुम हो
। वह जो चीज तुम्हारे अन्तर में प्रकाश और शब्द की साक्षी है
ह सतगुरु यानी तुम्हारा अपना ही आपा असली सतगुरु है। मगर
ह मेरी समझ में नहीं आता था तो दाता कहते हैं—

फकीरा गुरु तो तेरे पास
त्याग भ्रम विचार मन को छोड़ जग की आस,
आस कर गुरु चरन की, सव से होय निरास।

वो गुरु के चरण क्या हैं? गुरु के चरन प्रकाश और नूर है।
स प्रकाश की ही पूजा सनातन धर्म बताता है—

भूर्: भुवः स्वः महाजनः तपः नित्यं
तत् सवितुर्वरेण्यं।

बेद मार्ग में हवन करते हैं। यह तो बाहर में हवन करते हैं।
ास्तव में प्रकाश तुम्हारे अन्तर है। अपने ख्याल के सम्पूर्ण विचारों
को प्रकाश में स्वाहा करना असली यज्ञ हैं। मुसलमानों में भी नूर
है। एक और फिरका है वह भी आग को पूजते हैं। २४ घण्टे आग
अपने घर में रखते हैं। असली मतलब यह है कि जो प्रकाश तुम्हारे
अन्तर है वह गुरु के चरण है—

तेरे मन में तेरे तन में तेरे स्वाँसों स्वाँस,
गुरु बसे दिन रात प्यारे धर चरन विश्वास।

अब मेरे तन में, मेरे मन में. मेरे सांसों में कौन बस्तु हमेश रहती है ? महर्षि जी तुम्हारे अन्तर तुम्हारे तन में तुम्हारे मन में आते हैं। क्या फकीरचन्द तुम्हारे साथ रहता है ? ऐ इन्सान ! तेरी अपनी ही आत्मा रहतो है तू आप है। वह गुरु कौनसा है जो सदैव तुम्हारे पास रहता है ?

तुम्हारे अन्तर सदैव रहने वाला कौन है ? तुम्हारी अपनी है बेद मन्त्र हैं—

'ओम् पूर्ण पूर्ण मध्य प्रत्येक' चीज पूर्ण है। पूर्ण से पूर्ण ही निकलती है। आगे दाता दयाल मुझे कहते हैं—

गुरु नहिं तीर्थ ब्रत में, गुरु नहिं योग अभ्यास,
ढूंढ अपने हृदय में, वहाँ है उनका बास।

तुम योग की समाधी लगाते हो अर्थात जहां तुम अपनी वृति को जोड़ते हो वह योग है। योग का अर्थ है जोड़ना। जिस बस्तु के साथ तुम जोड़ते हो वह गुरु नहीं है। गुरु तो तुम्हारो अपनी जात का अनुभव है। कल मैं बोल रहा था, तो भूपसिंह कहता है कि आपकी शिक्षा तो सन्तों के लिए है दुनिया क्या समझेगी। मैंने कहा कि तो क्या तुम मुझसे भी यही आशा करते हो कि मैं यह कहूँ कि मैं गुरु हूँ. मैं तुम्हारे अन्तर जाता हूँ, मैंने यह कर दिया, मैंने वो कर दिया अगर मैं ऐसा कहता हूँ तो तुम जो कुछ मेरी इसके बदले में सेवा करोगे वो मुझे खा जाएगी। इसलिए इन सन्तों को वेड़ा गरक होता है। They have never been true to their desciples, मैं यह देखकर डर गया। मेरे साथ कुछ हो मुझे इसकी कोई आपत्ति नहीं। मैं समझूंगा कि मेरे पिछले जन्म के कर्म थे मैंने दुःख उठा लिये। कम से कम मुझे इतनी तो शान्ति है कि मैंने इस जीवन में किसी को कोई धोखा नहीं दिया। किसी के साथ फरेव व चारसौ बीस नहीं की। आप ही बताओ आपने लाखों सत-ग सुने होंगे तुमको कोई महात्मा ऐसी बात कहता कि मैं तुम्हारे

स नहीं जाता या कि मैं गुरु नहीं हूँ। क्या कहता है कोई कोई
ीं कहता। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है
ी उचित है। कान को हाथ लगाता हूँ। मेरे जीवन की यही
esearch है। जो कुछ मैंने अनुभव किया वो कहता हूँ कि दाता
कहा था फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं
भी नहीं कहता कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ लोग उसको मानें।
तो अपना कर्म भोगता हूँ। मैंने प्रण किया था कि। अतः अपना
भव कहता हूँ। दुनिया गुरु मत में शामिल है कोई निरंकारी को
ता है कोई बुत को पूजता है, कोई राधास्वामी को पूजता है।
ा अनुभव क्या है कि गुरु क्या है? ज्ञान अनुभव, समझ और
हारे अपने आपका नाम गुरु है। मगर जहाँ तक तुम कैसे पहुँच
ते हो। मैं स्वयं सोच रहा हूँ कि मैं कहां बोल रहा हूँ। क्या आप
ग समझ सकते हैं? नहीं। अतः तुमको क्या करना चाहिए।
कुछ प्रत्येक ने करना है वह सब के लिए एक नहीं है। प्रत्येक
क्ति का स्वभाव और परिस्थितियां अलग अलग हैं। प्रत्येक व्यक्ति
लिए एक ढंग नहीं है तो जो भेद को जानने वाला गुरू होता है
जिस ख्याल वाला और जिस जिस उलझन या जिन जिन
लात के चक्र में इन्सान आया हुआ है वह उसको उसके हालात
ुताबिक देख कर उसको शिक्षा देता है ताकि वह जिन हालात
ुखी है उसका इलाज किया जाये। यह गुरुमत है। इसलिए
ास्वामी मत में आया है—

गुरु जो कहें सो वहत कर मान,
गुरु जो कहें सो चित धर ध्यान।

मैं आपको गुरु मत बता रहा हूँ। आजकल क्या है? आदमी के
में तो रोटी नहीं है। गुरु महाराज को लिखा है कि भाई 'सुमि-
ध्यान करो। मेरी बात में यह Guruism गलय Guruism है।
यह जिस प्रकार डाक्टर रोगी के हालात को देख कर उसकी

बीमारी के Rule cause को देख कर उसको इलाज का उपाय वताता है, उसके घरेलू जीवन के वातावरण को देख कर उसको इलाज बताता है ऐसे ही गुरु वह हैं जो चेले के सम्पूर्ण ख्यालात को समझे सुने और उस नियमानुसार उसको Guide करे जिससे वह उस दुःख से निकल जाये। माफ करना। गुरु सब बने हुए हैं सबके लिए एक रास्ता नहीं है तुम गृहस्थी हो किसी जगह लड़ाई करनी पड़ जाती है तव तुमको शान्ति मिलेगी। क्षमा करना। मैं बात सच्ची करता हूँ। मेरे साथ बीती हुई है। मुझे और शिक्षा मिली। मेरे छोटे भाई राय साहिब को और शिक्षा मिली। मेरी पत्नी को और शिक्षा मिली, कुबेरनाथ को और शिक्षा मिली। कश्मीर में गोबिन्द स्वामी थे उनको और शिक्षा मिली। इसलिए बार-बार कहा जाता है कि जिस तरह एक डाक्टर है अगर उसको उस रोग की समझ नहीं आती और वह उसका इलाज करता है वह दोषी है। इस तरह जो गुरु नाम जपता है जिसके पास तुम जाते हो मगर उसके दिमाग में इतनी शक्ति नहीं है कि उसकी बीमारी के Soul Cause को समझ जाये और फिर उसको इलाज वताये तो वह गुरु काहे का इसलिये क्योंकि हर व्यक्ति के ख्यालात बाक्यात और कर्म भिन्न भिन्न हैं तो गुरु उसको हिदायत करके उसको उस उलझन से निकाल देता है और फिर जिस भ्रम में वह फँसा हुआ है उसके उस भ्रम को दूर करके फिर उसको सच्चाई का रास्ता बताता है। यह मेरा अनुभव है।

आज मैंने सत्संग में बहुत बता दिया है मगर सत्संग में प्रत्येक व्यक्ति परमार्थ या रूप को तो ढूढते नहीं आता। कोई पेट से दुखी है कोई बीमारी से दुःखी है। इसलिए मैं जहाँ भी जाता हूं वहां यह कहता हूँ कि जहाँ के वो सत्संगी हैं उनका पैसा उसी सत्संग में खर्च किया जाये। जो सत्संगी आते हैं उनकी कोई दुःख हो, रोग हो उस पैसे से उनकी सहायता की जाये। यह मेरा अपना नियम है। हजूर

हाराज राय सालिगराम साहिब ने अपनी किताब में लिखा था क मेरे पास अमीर व्यक्ति आते हैं मैं उनसे प्रेम करता हूँ यह इस-ाए कि क्योंकि वो धनी है। मेरे पास दुःखी आते हैं उनके पैसे से उनकी सहायता करता हूँ मैं भी मन्दिर में यही करता हूँ। पर-ार्थ कुछ और चीज है। मैं कहता हूँ परमार्थ सुगम है स्वार्थ कठिन । सांसारिक आवश्यकतायें इतनी प्रबल है कि हम बच नहीं कते —

नहिं दरिद्र सनम कोई दुख दारुन।

मगर हम ऐसे भी हैं कि उनके पास है भी मगर फिर भी हम ालच करते हैं वो दोषी हैं। इसीलिये मैंने इन्सान बनो की आवाज ठाई है कि ऐ इन्सान। तू इन्सान के काम आ सबसे पहले अपने रवालों को देखो। वह मूर्ख है जिसका भाई गरीब है मगर वाले कीर को ५००० रु देता था। **He is a criminal** समझ रहे हो ठ साहिब कि मैंने क्या कहा। 'अब्बल दरवेश, बाद दरवेश।' मेरे ात को स्मरण रखना। घट वो भेद है जो कोई महात्मा नहीं हता। सब आपको यही कहते हैं कि वेतन का दसवां भाग गुरू हाराज के लिए निकाल दो। अपनी हैसियत से अधिक दान मत रो। **Exceptions** और हैं। वो वो होते हैं जो एक विशेष लहर वह जाते हैं उनकी सहायता प्रकृति आप करती है। वो **Hole leartedly** अपना कुछ नहीं समझते। जैसे नरसिंह भगत। उनकी **xception** है। आम जनता तो नरसिंह भगत नहीं हो सकती। रा बाई का विश्वास था कि ठाकुरों का प्रशाद अमृत होता है। ग समझते हैं कि गुरु चरनामृत पीने से वो तर जायेंगे। मगर वो रा बाई जैसा विश्वास है फिर तो मैं मान लेता हूँ कि जो पैर कर पीयेंगे तो बो तर जायेंगे अगर वैसा नहीं है तो पैर धोकर येंगे **T. V.** हो जायेगी अर्थात बीमार हो जायेंगे शारीरिक खराबी जाएगी **Ehtrcan devoin** की कोई और बात है। उस पर

कोई अमल नहीं होता। मीरा बाई को विष दिया गया कोई प्रभाव नहीं हुआ। नरसिंह भगत की हुण्डी सकर गई कि नहीं सकर गई। वो **accepions** हैं मगर मैं तो आप साधारण आदमियों से बात कर रहा हूँ। किसी समय ऐसी हानि होती है जिसका कोई हिसाब नहीं। इसलिए यह गुरुमत है—

गुरु जो कहे सो हितकर मान,
गुरु जो कहें सो चित धर ध्यान।

इसलिए असली गुरु का रूप तो वह है मगर वहां तक पहुँचने से पहले हमें क्या करना चाहिये ? किसी योग्य व्यक्ति के चरणों में चले जाओ। अगर तुम्हारा विश्वास नहीं बैठता तो तुम न जाओ। तुम सच्चे बन कर अपने अन्दर में प्रार्थना किया करो। सच्चे बन कर मांगो। प्रकृति तुम्हारा कोई न कोई कारण बना देगी। तुमको वहाँ ले जाएगी। मुझे उस मालिक के घर की तलाश थी। क्या मैं दाता दयाल को जानता था कि कौन हैं ? मेरा जजवा था वहां ले गया और मेरा कार्य पूर्ण होगया। तो आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया गुरु का असली रूप भी बता दिया कि वह तुम्हारी जात है। मगर इस समय यदि तुम अपनी जात में ठहरना चाहो नहीं ठहर सकते। क्योंकि तुम्हारे अन्दर बासनायें भरी हुई हैं। दुनियाँ की आवश्यकतायें हैं। इसलिये सबसे पहले अपनी वासनाओं को अनुकूल बनाओ। बासना त्यागी नहीं जाती मैं बता देता हूँ। तुम लोगों को भोग भौगो माया बासना है यह भोग के योग्य है। जब अनुभव हो जाएगा यही भोग भोगने के पश्चात तुम अपनी सुरत का उस तरफ से हटा कर दूसरी ओर लगा दोगे इसलिये मैं अभी तालीम बोल तो गया मगर आम जतता के लिए मैं कहता हूं कि सब से पहले अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को काबू में रखो। मेरे पास नवयुवक आते हैं वो अशान्त हैं। उनकी अशान्ति

ा मुख्य कारण क्या है ? उनके ब्रह्मचर्य गिरे हुए हैं। आप हैं आप पनी सन्तान का ख्याल रखो। वह गन्दे ख्याल में आकर अपने ानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को न खोयें वरना इनको या तो ाधु या डाक्टर लूटेंगे। बड़ी स्पष्ट और अनुभव की बात आपको ताता हूँ।

मेरा अपना हाल देख लो मैं अशान्त था। उस समय तो तुम झे अपनी अशान्ति के कारण का पता नहीं था अब मैं खूब सम-ता हूँ। १३ वर्ष की आयु में शादी हुई, १५॥ वर्ष की आयु में हस्थ में फँसा तो अशान्ति मेरे हिस्से में न आती तो सके हिस्से में आती। एक गरीबी और दूसरे ब्रह्मचर्य की गिरा-ट। मैं आपके समक्ष अपना मुख काला करके आप लोगों को च्चाई बताता हूँ ताकि आप सत्संग में आयें तो मेरे पास से कुछ जाओ। १२ वर्ष मैं बसरे बगदाद में रहा। वहाँ पैसा भी आगया ौर मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य और भक्ति भाव में रहा। स समय का मेरा चित्र आप देखें तो वह चित्र आदमी को आक-ात करता है। १२ वर्ष बाद मैं घर को आया। दाता ने कहा म्हारे सन्तान नहीं है सन्तान पैदा करो। अगर तुम सन्तान पैदा रने के ख्याल से औरत के पास जाता तब तो मुझ दुःख न होता। तो विषय विकार में फँस गया अगर मेरे १२ वर्ष की तपस्या की ान्ति थी वह सब समाप्त होगई। तो जिन व्यक्तियों के मानसिक र शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरे हुए होते हैं उनके भाग्य में अशान्ति ा आना आवश्यक है कोई रोक नहीं सकता। दूसरे पेट की रोटी । नवयुवक बालक कुछ तो गलतियाँ करते हैं, कुछ लापरवाह हो ते हैं बाप पर बोझ पड़ता है, भाई पर बोझ पड़ता है। घर में ाना जंगी हो जाती है। इसलिए मेरे मार्ग ने दाता ने जो मुझे हा हुआ है—

अपनी कमाई आप कमा कर खाओ। एक नवयुवक युवक हो

होगया उसका कोई नैतिक और कानूनी अधिकार नहीं है कि वह बाप या भाई की कमाई खाये। उसका कर्तव्य है कि वह अपनी रोटी आप कमा कर खाये। तुम बूढ़े हो जाते हो तुम्हारा लड़के पर सिवाय रोटी-कपड़े और दवाई के कोई अधिकार नहीं। बूढ़े आदमी का कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने लड़के की कमाई पर मौज करे या दान दे। न, बिलकुल नहीं। इन्सान बनो की यही शिक्षा है। इसमें क्या होगा ? तुम्हारे घरों में शान्ति रहेगी। इसलिये मैंने अध्यात्मिकता छोड़दी। मैंने पहले इन्सान बनो की आवाज उठाई है।

तीसरी बात यह है कि अपनी आमदनी से अधिक खर्च कभी मत करो। यहां तक हो सके शादियों, विवाहों में कम खर्च करो। हमारे दुखों का तो यह कारण है। असली कारण को हम समझते नहीं हैं और गुरु के पास जाकर। अरे, राम नाम ने रोटी नहीं देनी मन्दिर में जाकर प्रार्थना करने से तुम्हें रोटी नहीं मिलेगी बल्कि कमाने से मिलेगी। काम करो। नवयुवकों को चाहिये कि काम करो, यही दाता की शिक्षा है। तुम चंचल बुद्धि वाले हो। मैं तो ऊँचा बोल गया। तुम्हारा यहां का प्रबन्ध बहुत अच्छा है। खूब काम करो। एक दूसरे की सहायता करो। तुम्हारे नवयुवक बच्चे हैं इनको काम पर लगाओ। किसी को मुफ्त खाना देने के अतिरिक्त अगर तुम उसको किसी काम पर लगा दो तो यह बहुत अच्छा है किसी दुखिये की सहायता करना सीखो और सबसे अधिक दुःखी हम गृहस्थी हैं। इन साधुओं को देने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा गृहस्थियों को दो जो बेचारे दुःखी हैं। मैं गृहस्थियों को देता हूँ। यह इन्सान बनो की शिक्षा है। परमार्थ क्या है ? परमार्थ अपने रूप का ध्यान है। तुम्हारे मन की बृति कमजोर है उसको सुमिरन, ध्यान देकर के बलवान करो। सुमिरन, ध्यान तुमको मुक्ति नहीं देगा। सुमिरन ध्यान तुम्हारे मन की इच्छा शक्ति को बलवान करेगा।

हारी दुनिया भी बन जाएगी और जो तुम्हारा बलवान हुआ मन
ा तुमको वह आध्यात्मिकता की ओर ले जाएगा। सब से पहले
ान बनो। इन्सान किसको कहते हैं? जो किसी दूसरे के अधीन
ं है। बस एक बात कहता हूँ। जो किसी दूसरे का आश्रय नहीं
ा वह इन्सान है। बशर्ते कि दुःख हमारा क्या है? तुम्हारा विषय
ार का जीवन, तीसरे किसी की अधीनता। तो इन्सान कौन है?
ार साहिब का शब्द है—

जग में मानुष कोई नहिं देखा।
जो देखा सो बैल बना है, बैल पशु के रूपा,
बैल समान फिरत नित डोले, क्या प्रजा क्या भूपा
कोई बैल बना गोरख का, कोई बैल शंकर है,
कोई बैल है रस्म रीति का, कोई मिट्टी कंकर है।
कोई बैल है चार बेद का, कोई खट दर्शन का।
अपनी किसी ने खबर न पाई, देखा न मुख दर्पण का।

इन्सान या मनुष्य कौन हूँ? जो मैंने पहले कहा है। जो अपने
को जानता है, और शारीरिक, मानसिक और प्रकाशक इनके
ातात का कैदी नहीं है। उसका नाम इन्सान है—

पंथ के बैल पँथ में डूबे, भीख भिखारी लाखो,
यह सब पशु है नर नहीं, कोई देखले अपनी आँखें,
गुरु पशु, त्रिया पशु, नर पशु संसार
मानुष सोई जानिये, या हैं विवेक विचार।

ं आपको सत्संग में क्या देता हूँ? सत्संग से क्या मिलता है?
और समझ-ही देता हूँ। अपने सारे साहित्य में कि बात यह
यह है—

बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

ाष जो कुछ तुम लोगों को मिलता है कोई गुरु कुछ नहीं देता,

सब हर व्यक्ति का अपना विश्वास और ख्याल काम करता है। यह बिलकुल सच्ची बात कहता हूं। यही दाता दयाल एक शब्द में लिखते हैं—

ऐ मेरे प्यारे भाई, देखा सम्भल कर चलना,
खोटे कर्म न करना खोटी न बात कहना।

खोटा कर्म क्या है ? अपनी जाति सुख के लिए किसी को तंग करना, हानि करना, किसी का बुरा करना या किसी का धोखा करना। यह पाप है बस और नहीं। मैंने यह समझा है। मर जाना है चार दिन के जीवन में अपने भाव को Carrup करना नहीं चाहता। इसलिए साफ कहता हूँ। मेरा रूप लोगों के अन्दर अमेरिका, अफ्रीका सब जगह प्रकट होता है। मगर मैं नहीं कहीं जाता हूँ न आता हूँ। जब अकेला बैठता हूँ, सोचता हूँ। तुमको पता होता है ? मुझे तो कोई पता नहीं होता और सच पूछो तो किसी महात्मा को पता नहीं होता। सब मेरे सामने मानते हैं। यह जो कुछ किसी के अन्दर प्रकट होता है या किसी को कुछ मिलता है वह केवल उसका अपना ही विश्वास और ख्याल है। उसका अपना विश्वास ही यह सब खेल खेलता है।

दुख दोगे दुख मिलेगा,
सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को,
फिर गम पड़ेगा सहना।

बोलो ख्याल करतव दरिया से है मुश्हरा
तुम देखना न इनको लहरों में पड़कर वहना।
मन इन्द्रियों पर भाई जवत रखना तुम बराबर,
जावता बने रहोगे खुशहाल होकर रहना।
अपनी निशिसत रखना तुम आत्मा पर हरदम,
आत्मस्वरूप रह कर, संसार में विचरना।

आत्मस्वरूप हमारा प्रकाश। अगर तुम्हारे अन्दर प्रकाश पैदा हुआ तुमको एक गुरु बताता हूँ। जिस गुरु से नाम लिया, को पूजते हो उस गुरु के रूप को शब्द ब्रह्म और पारब्रह्म मानो और प्रकाश का रूप मानो। एक रूप बनालो। मैंने कब कहा के तुम मेरा रूप बनाओ। मैं नहीं कहता मेरा रूप बनाओ। भी तुम्हारा विश्वास बैठता है उसका रूप बनाओ। जो रूप रे अन्दर प्रकट होता है उसको यह मत समझो कि बाबा फकीर । होशियारपुर या कहीं और रहता है। उसको समझो कि वह और शब्द और प्रकाश का रूप है। इस ख्याल को करते हुए रे जीवन में बड़ा भारी परिवर्तन आ जाएगा क्योंकि मन तो है प्रकाश सदैव खुलता नहीं। इसलिए

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

ह आसान तरीका है। जो नाम तुमको कभी किसी गुरु ने हो उसका अर्थ पहले समझलो कि उसका अर्थ क्या है। जो तुमने उसमें समझा हुआ है जब उसको जपोगे उस अर्थ का जो विक अर्थ है उसकी तस्वीर तुम्हारे समक्ष आएगी। उदाहरण- मैं निम्बु का नाम लेता हूँ। उसे काटकर नमक लगाकर चूसने म्हारे सामने जिक्र करता हूँ तुम्हारे मुख में पानी आएगा कि ऐसे ही जो नाम तुमको गुरु ने दिया है। मैं तो गुरु नहीं हूँ न मैं दावा करता हूँ। मैं तो गुरुमत को साफ कर चला क्रि ई यह है कि तुम मूर्ख मत बनो। वह जो नाम है अगर तुमको ाम के अर्थ का पता है कि इसका अर्थ क्या है उसको जपोगे तुमको कुछ लाभ हो जायेगा। अगर तुमको उस नाम का ो मालूम नहीं। जिस तरह मैं निम्बु का नाम लेता हूँ। एक बैठा हुआ है उसको निम्बु का अर्थ पता नहीं है तो उसके पानी नहीं आएगा। अतः जो काम करो सोच समझ कर

करो। अज्ञान की भक्ति की आज भी हानि है और कल भी हानि है। एक जजवा पैदा होता है थोड़े दिन रहता है पीछे से उखड़ जाता है। गुरु आदर्श है, इष्ट है जो इस सच्चाई की समझ रखता है वह निश्चय ही गुरुमत से पूर्ण लाभ उठाता है। मैंने सच्चाई बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मातायें बैठी है। मातायें बेटियों, बहनो। तुमको एक बात बताता हूँ। घरों में शान्ति रखो, अच्छी सन्तान को पैदा करो। राष्ट्र को नेता नहीं बल्कि तुम बना सकती हो। जिन ख्यालात को बच्चा पेट में है तुम सोचोगी भोग के समय तुम्हारे जैसे ख्याल होंगे खूब दिलाते समय तुम्हारे जैसे ख्याल होंगे उसका प्रभाव तुम्हारे बच्चों पर होगा। बिलकुल साफ और सच्ची बात कह देता हूँ। आप है सच्ची देवियाँ या मातृ शक्ति जिससे अवतार ऋषि, मुनि, महात्मा बुद्ध और औलिया पैदा हुए हैं। अपने इस अधिकार को पहचानो। आपने ही अपने इस अधिकार को पालन करके निश्चय ही संसार को स्वर्गधाम बना सकते हो अच्छी सन्तान पैदा करो। समय काफी होगया है इसलिए यही सत्संग समाप्त करता हूँ। सबको राधास्वामी।

———

शब्द

सोच समझ कर जतन फकिरवा ॥टेक॥

छिन छिन उमर घटत दिन राती, कभी सांझ है कभी प्रभाती।
माया मोह महा उत्पाती, इनसे लगा मत लगन फकिरवा।
सुख सम्पत्ति धन माल खजाना, इन्हें देख क्यों जिय ललचाना।
झूठे हैं सब नाम निशाना, तासों उपजे तपन फकिरवा॥
गुरू भक्ती है सब का सारा, देखा सोच समझ विचारा।
जानेगा कोई गुरु मुख प्यारा, मान मान यह बचन फकिरवा॥
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी।
अब बुझी मन की जलन फकिरवा॥

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

मंगल मय गुरु चरण ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाए शान्त पद देने वाले॥
भव सागर अति अगम पंथ नहीं सूझे कोई।
शब्द जहाज चढ़ाय पार, गुरु कीन्हा सोई॥
बूढ़त रहे मँझदार मिला नहीं कोई सहाई।
आये गुरु दातार बाँह गह मेरी ठोर लगाई।
नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।
पद अभेद दरसाय भेद का फंद छुड़ाया।
राधास्वामी पद कमल मन मधुप लुभाना।
मन बानी से परे मिला धुर पद निर्वाना॥

ाधास्वामी,

आज गुरु पूर्णिमा है, व्यास पूजा है, भारतवर्ष में इस हिन्दू ाति में एक जज्बा है। किसका ? एहसान का तुम देखो हिन्दुओं में र पूजा (पति की पूजा) का दिन निश्चित है। करवा चौथ और ास की पूजा का दिन निश्चित है। ऐसे ही कोई दूसरी प्रकार की ना का दिन निश्चित है। तो आज मेरे दिल में ख्याल आता है कि ं मैं क्या एहसान मानू, दाता दयाल तो यहां हैं नहीं जो उनकी ना करूँ। यह जो शब्द आपने सुना है। अगर ध्यान से सुनो तो ा चलेगा कि गुरु क्या देता है। गुरु शांति देता है।

मंगल मय गुरु चरण ताप त्रय हर लेने बाले।
भव दुख सकल मिटाय शान्ति पद देने वाले॥

गुरु का काम केवल शान्ति देना है। दुनिया ने गुरु का अर्थ नहीं समझा कोई कहता है गुरु पुत्र देता है, नौकरी देता है, गुरु ये देता है, गुरु वो देता है, मगर मेरी समझ में यह आया है कि जो कुछ तुमको या हमको मिलता है ये हमारे अपने पिछले या इस जन्म के कर्म हैं या विश्वास है। कोई गुरु, महात्मा या ईश्वर, परमेश्वर किसी को कुछ नहीं देता। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने ही कर्म हैं और विश्वास है। विश्वास कर्मों को बदल देता है। जब अपने ही कर्म हैं तो फिर गुरु की क्या आवश्यकता है। यह एक प्रश्न मेरे दिल में उठता है। गुरु अपने कर्म ठीक बनाने के लिए रास्ता बताता है। अपने विचारों और मनुष्य जीवन को अच्छा बनाने का ढंग बताता है इसलिए गुरु की महिमा है। गुरु तो एक बड़ा लम्बा चौड़ा शब्द है। गुरु नाम है ज्ञान का, समझ और विवेक का। आप खुद सोचो कोई काम दुनिया का ऐसा नहीं जो बिना सोचे समझे आप कर सकते हैं। डाक्टरी करते न हो आपको डाक्टरी का ज्ञान मिला हुआ है। डाक्टरी का एक ज्ञान है। दुनिया की और मशीनें बनती हैं उनका एक ज्ञान है। तो मनको शान्ति देने के लिये भी एक ज्ञान है। तो मन को शान्ति देने के लिये भी एक ज्ञान है। जो मुझको दातादयाल की दया से आप लोगों को मिला है। इसलिये इस समय दातादयाल तो यहाँ हैं नहीं (मेरे शरीर को कष्ट पड़े झूठ नहीं बोलता मैं आपको सच्चा सतगुरु मानकर आपको नमस्कार करता हूँ। अगर दातादयाल जीवित होते तो मैं उनकी पूजा करता। वह तो यहाँ हैं हीं नहीं कहाँ गये ? क्या पता आप लोगों का अहसान मुझ पर है। वह एहसान क्या है ? आपने मेरे बहमों का इलाज करके मुझे शान्ति दी है। दुनिया यह चाहती है कि गुरु फूँक मारकर उनको शान्ति दे दे ये गलत है। कोई गुरु किसी को फूँक मार कर शान्ति नहीं दे सकता। तब मनुष्य को अपने ही अन्तर अपने ही विश्वास से, अपनी ही समझ से शान्ति मिलेगी। आज गुरु पूर्णिमा का दिन है। मैं अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कहा है। और ऊँची आवाज से घोषणा करता हूं कि कोई गुरु कोई महात्मा कोई ईश्वर कोई परमात्मा किसी को कुछ नहीं देता। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके अपने ही कर्म, अपने

ही धर्म और अपने ही विचारों का फल मिलता है। यह मैंने ९३ वर्ष की आयु में आप लोगों से सीखा है।

ये मैं जानता हूँ कि मेरे साफ साफ कहने से मेरे पास कोई नहीं आयेगा और मन्दिर में पैसा नहीं आयेगा मगर यह सच्चाई है। जो मैं सन्त सतगुरु के वक्त रूप में आज आप लोगों का एहसान मानता हुआ कह रहा हूँ कि मुझे गुरुमत से क्या मिला। यही सन्त कहते हैं।

गुरु बताते साध को, साध कहें गुरु पूज।
अर्स परस के मेल से बूझी बूझ अबूझ॥

पिछले समय में बात को परदे में रखा गया था, कबीर साहब ने भी रखा, स्वामी जी ने भी परदा रखा, दातादयाल ने भी परदा रखा। वह परदा उस समय के लिए आवश्यक था। अब अपना राज्य है हम अपनी हकूमत के आप जुम्मेवार हैं। इसलिए दाता के आदेश के अनुसार मुझे इस भेद को खोलने की आवश्यकता पड़ी। ये मैं क्यों कहता हूँ। मुझे शान्ति कैसे मिली। केवल मन के रूप को समझ लेने से केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न मैं किसी का काम करता हूं। न किसी को सतलोक ले जाता हूँ। नहीं किसी को मरते समय ले जाता हूं। वह कौन जाता है? इन्सान! वह तेरा अपना विश्वास जाता है। तेरा अपना कर्म जाता है, वह तेरा अपना मन ही है। तुम डाक्टर अहूजा हो वहां से पत्र लिखते रहते थे। अगर मेरे वस में हो। तो दुखी जीव मेरे पास आते हैं, मैं उन सबको सुखी कर दूँ। मैं बात सच्ची कहता हूं। आग लगे गुरुवाई को मैंने गुरुवाई क्या लेगा? मैं तो हिन्दू था ब्राह्मण के घर जन्म हुआ। किसी वस्तु की तलाश थी जहाँ से आया हूं। सात वर्ष की आयु थी। मैं आपको कहा करता राम और कृष्ण को पूजता था, अधिकतर सिद्धियां शक्तियां आई। एक बार गंगा वाले में था कहीं से आ रहा था, राम कृष्ण की मूर्तियां मेरे सामने होती थी। वहां गौ का गोवर पड़ा था कृष्ण जी की मूर्ती ने कहा गोबर खा। मैंने गोबर उठाया और खा लिया जब स्टेशन पर आया सोचा किसी स्थान पर भक्त माल में यह नहीं लिखा न ही किसी ने कहा है कि गोबर खा

ले। मैंने गोबर उठाया और खालिया जब स्टेशन पर आया सोचा, किसी स्थान पर भक्त माल में यह नहीं लिखा नहीं किसी ने कहा हो कि गोबर खा ले ये कृष्ण नहीं है, जिसने मुझे कहा है। फिर क्योंकि मैं राम के रूप में मालिक को मानता था इसलिए मालिक से प्रार्थना करने लगा। २४ घन्टे रोया कि हे राम मुझे मिल जा क्योंकि ब्राह्मण था पढ़ा हुआ था।

नाना भाँति राम औतारा
रामायण शत कोट आपारा।

मैंने कहा वह आया करता है मेरे लिए भी आवेगा। २४ घन्टे रोने के पश्चात एक दृश्य था जो मुझको दाता दयाल के चरणों में लेगया। मैंने उनको राम समझ कर पूजा। उन्होंने मेरे विचार को बदला क्या कहा ? कि तू भक्ति करता है। सोच समझ के कर, मैं उनको राम समझ कर पूजता था और दाता दयाल को गुरु समझ कर नहीं लिखता था। मालिक समझ कर लिखता था। परमतत्व समझ कर उनको मारा मगर उन्होंने भेरे विचारों को उस समय बड़ी हिकमत से बदला। एक शब्द में वह मुझे लिखते हैं।

फकीरा सोच समझ पग धार।
बिन समझे को ई पार न पावे, भटके बारम्बार।

ये सतसंगी जो भटकते फिरते हैं। ये क्यों भटके फिरते हैं ? क्योंकि इनको सच्ची समझ नहीं है। बड़ा आफीसर बन जाना या धनवान हो जाना और वस्तु है। सच्ची बुद्धि और सच्चा विचार रखना और चीज हैं। बड़े बड़े धनी प्रायः अज्ञानी होते हैं और गरीब से गरीब समझदार हो सकता है। जब मैं उनसे प्रेम करता था और उनको राम समझ कर पूजता था तो वह मुझे कहते हैं। फकीरचन्द, सोच समझ कर पैर रख, यही बात सुखमनी साहब में लिखी हुई है।

सत् पुरुष जिन विवेक्या, सत् गुरु तिस का नाम,
वाके संग शिष ऊभरे, नानक हरी गुण गान ॥

वह लिखते हैं जिस आदमी ने सत् पुरुष के विवेक लिया समझ या वह सत् गुरु हैं। उसकी संगत करो, उसकी सेवा करो और की पूजा करो। फिर वह लिखते हैं सत् पुरुष क्या है ?

जिभ्या एक अस्तुती अनेक
सत् पुरुष है पूरण विवेक ॥

सन्तों के मार्ग में कोई अन्तर नहीं, केवल बानी का अन्तर है।

बिन समझे कोई पार न पावे भटके बारम्बार।

तुम भटकते हो या नहीं भटकते ? किसी की स्त्री से नहीं बनती सी की पुरुष से नहीं बनती, किसी को घाटा पड़ गया, किसी का मर गया तो हम हाय हाय करते हैं, रोते हैं पिटते हैं। हमारे ान नहीं होती, जब सन्तान हो जाती है। हमारे गले में अँगूँठा ा है तो फिर हम यूँ पीटते हैं। तो इस दुख को दूर करने के ए गुरु मत है। गुरु क्या करता है ? सच्ची समझ देता है। सच्ची व विचार देता है जब तक किसी को सच्ची समझ और सच्चा ार नहीं मिलता उसके मन को शान्ति नहीं मिलती। वह भट- ा रहेगा। कभी कहीं जावेगा कभी कहीं जावेगा, कभी हरद्वार ागा, कभी चिन्त पुरणी जायेगा। कभी ब्यास जावेगा कभी होशि- पुर आवेगा। वह कहते हैं—सोच समझ पग धार।

संशय दुबिधा और चतुराई ये अज्ञान विकार।

कई आदमियों के मनों में प्रश्न पैदा होते हैं। किस बात पर ास नहीं होता और कई बड़े चालाक होते हैं। वह कहते हैं यह माया का जाल है जो इसमें फँसा उसको शांति नहीं मिलती गुरु पशु नर पशु, तिरिया पशु, वेद पशु संसार। वो कहते हैं नर पशु है, नर पशु का अर्थ है आदमी आदमी की पूजा करता सको सब कुछ समझता है, कोई स्त्री पशु है स्त्री के पीछे फिरता

रहता है। वह जूते भी मारती है, गालियां भी निकालती है, मगर काम के वश में फिर वह उसी के पीछे फिरता है। कोई गुरु पशु है, बात को समझता नहीं, गुरु के पीछे फिरता है। उससे प्रार्थना करना उसको पैसे देना, मत्थे टेकना, सब कुछ उसी को समझना, गुरु मुझे कुछ देगा ये गुरु पशु हैं। वेद पशु कोई कहता है, वेदों में यह लिखा है। कोई कहता है कुरान सरीफ में यह लिखा है, गीता रामायण में यह लिखा है, मैं कैसे मानूँ गीता के कहने वाले कृष्ण जी ने १८ अध्याय गीता के अर्जुन को सुनाये जैसा कि हमारी पुस्तकों में लिखा हुआ है। मगर महाभारत तो यह कहता है कि पाँचों पाण्डव और सारे कौरव नरक में गए। वह जो उसने गीता सुनी उससे उसको क्या मिला ? कुछ नहीं। गुरु अर्जुन देव सुखमनी साहब में लिख गए कि प्रभु के सुमिरन करने वाले का शत्रु टल जाता है। उसका दुश्मन कोई नहीं रहता। मगर गुरु अर्जुन देव के भाई ने कितनी दुश्मनी की ? उनको कहाँ पहुँचाया।

तो सिद्ध हुआ कि किसी बात को बिना सोचे समझे करने से कोई शांति किसी को नहीं मिल सकती। बिल्कुल सच्ची बात है। मुझे आप नहीं मिली मैं गुरु पशु था। शाँति मुझ सतसंग की दया से मन के रूप का विचार करने से मिली। इसलिए आप मेरे सच्चे सतगुरु हैं। और आज गुरु पूर्णिमा का दिन है आपकी पूजा करना चाहता हूँ। आप लोग आये हैं। धर्म से कहता हूं मैं आपकी पूजा करना चाहता हूं। मुझको जो कुछ दातादयाल लिख रहे हैं। उसकी समझ नहीं आती थी। तो उन्होंने कहा था, तुझको सच्चा सतगुरु सतसंगियों के रूप में मिलेगे। वह तुम्हारे इस भ्रम को दूर करेगा और आप लोगों ने भ्रम को दूर कर दिया। तो आदमी को सोच समझ के साथ काम करना चाहिए मैं सतसंग में क्या करता हूँ ? सोच और समझ देता हूँ। मगर आजकल के गुरु क्या करते हैं। कबीर साहब लिखते हैं।

ये कली गुरु बड़े परपंची, डारी ठगोरी सब जग मारा ।
वेद कतेब दोनों फन्द पसारा, तेई फन्दे पर आया ।।
कहें कबीर तेही हंस न विसारो, जा में ज्ञान हारा ।

कोई सच्ची बात नहीं बताता । अपने अपने धर्म और मण्डल में ाने की कोशिश करते हैं । अपने पीछे लगाते हैं, मैं ऐसा नहीं ता आज गुरु पूर्णिमा का दिन है । दातादयाल का तो एहसान है का आदेश था मगर जो एहसान आप लोगों ने मुझ पर किया वह ना बड़ा है कि उसको जब तक मुझे होश है, मैं बिल्कुल नहीं भूल ता । जब मैं राम से मिलने के लिए गया था और दातादयाल को समझ के पूजता था । उस समय वो लिख रहे हैं ।

फकीरा सोच समझ पग धार ।
बिन समझे पार न पावे भटके बारम्बार ।
संशय दुविधा और चतुराई ये अज्ञान विकार ।
कोई नर पशु कोई त्रिया पशु गुरु पशु कोई गँवार ।

जो गुरु रूप को नहीं समझता और सेवा करता है । दातादयाल ते हैं वह गँवार बेसमझ हैं ।

वेद पशु हैं सब संसार, बिना विवेक विचार ।

वो कहते हैं वेद पशु । कोई कुरान शरीफ का उदाहरण देता है । गीता का उदाहारण देता है । कोई कहता है पहली बादशाही हती है, दूसरी बादशाही ये कहती है, तीसरी बादशाही ये कहती ष्ण जी ये कहते हैं । मनु जी ये कहते हैं । ये जितने ऐसा कहने हैं सब वेद पशु हैं और कबीर साहिब के शब्दानुसार सब के सब र हैं ये उनकी बातें हैं । अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्या ोक लिख गये ? हाँ ठीक लिख गये, ठीक लिख गये, ठीक लिख अगर आज मुझे सन्त मत की सच्चाई का ज्ञान न होता तो मैं स्वामी मत या सन्त मत की धज्जियाँ उड़ा देता । कभी किसी लिहाज न करता । मगर में मजबूर हूँ सचाई सचाई ही है । अै

यह सचाई मुझको तुम लोगों से मिली। जिसने मेरी आँखें खोल दी। मैं इस नतीजे पर आया कि जो किसी के कर्म में लिखा है वह होकर रहता है। सन्तों के अपने बच्चे नालायक निकले औरतों से उनका झगड़ा रहा। क्यों ? कर्म। इसलिये मैं शिक्षा को बदल रहा हूँ। मैं कहता हूँ ऐ मानव ! तू राम राम बेशक मत जप अपनी नीयत को साफ रख और अपना कर्म ठीक कर। तुम दूसरे गुरुओं के पास जाओ, कोई भी दुख हो वे कहते हैं ध्यान किया कर भाई, सुमिरन ध्यान से क्या बनेगा ? वह सुमिरन ध्यान भी ढंग से करना चाहिये।

माया पशु माया का बन्धवा मुक्ति पशु स्वीकार।

देखो क्या कहते हैं। वह कहते हैं, जो दुनिया में माया चाहते हैं, वह गलती पर हैं और जो मुक्ति चाहते हैं वो भी गलती पर हैं।

भक्ति पशु बन्धन नहीं काटे बूड़ा काली धार।

सब कहते हैं भक्ति करो, कोई कहता है राम की भक्ति करो। कोई कहता है अमुक की भक्ति करो कोई कहता है गुरु की भक्ति करो। अब मैं अपने जीवन में ऐसी बानियां सुन कर चकित हुआ और सचाई ढूढ़ना चाहता था तो क्या मैं ऐसा करने का अधिकार नहीं रखता ? भक्ति पशु भी बन्धन में है। कौन समझेगा सन्त मत को। क्या आप सन्त मत को समझने आए हैं ? आप लोग जो मेरे पास आते हैं ? क्या सचाई और असलीयत को समझने आते हैं। भक्ति पशु भी बन्धन में है। क्यों बन्धन में है। भक्ति जब की जायेगी किसी और की या गैरकी की जायेगी। दूसरा कोई होगा तो उसकी भक्ति करोगे। द्वेत भाव है वहाँ अद्वेत तो है नहीं। जो भक्ति पशु है, उनके बन्धन कैसे कटेंगे कट ही नहीं सकते जो चाहे करो। गुरु भक्ति क्या है ? गुरु की भक्ति ये नहीं है कि दस हजार रु० लाकर फकीरचन्द का मन्दिर बनवा दो। तब तुम भक्त हो नहीं, तुम लुट गए। अगर तुम्हारे पास है तो दे दो दूसरों के हित के लिए जो मरजी हो करो। मगर परमार्थ के विचार से अगर आप यहाँ १० मकान

नवा दोगे तो आप शान्ति को नहीं पा सकते। आप में अहंकार आ ायेगा कि मैंने बाबे को इतना रुपया दिया, मन्दिर बना दिया, मैंने ह मस्जिद बना दी, मैंने ये गिरजाघर बना दिया। भक्ति किसकी ? रु की। वह भक्ति क्या है ? जो इस समय आप कर रहे हैं शर्त यह कि तुम्हारा पूरा ध्यान मेरी बानी की ओर हो। गुरु की भक्ति है

दर्शन करे बचन पुनि सुने, फिर सुन सुन मन में गुणे।
गुन गुन छांट लेय उन सारा, मार धार तिस करे अहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भौ लाज अब गई नसाई।

कई आदमी प्रातः से शाम तक मेरी जान खाते हैं। सतसंग में हीं आते। उनको क्या मिलेगा मेरे दर्शन करने से ? ये उनका बहम हीं तो और क्या है ? भरम, मैं सारा दिन यहां रहता हूँ। कोई ११ ने यहां आता है कोई १२ बजे आता है कोई एक बजे और कोई दो ने आता है। क्यों आते हो भई ? दर्शनों के लिए। क्या बन जावेगा ई मेरे दर्शनों से ? तुम्हारा अपना विश्वास है और कुछ नहीं। यह ः भक्ति नहीं है। गुरु भक्ति यह है जो इस समय आप बैठकर मेरी त सुन रहे हैं। समझ रहे हैं और गुन रहे हैं। इसका नाम गुरु क्ति है। दूसरे शब्दों में यह सतसंग है। धन देने का परामर्श से ई सम्बन्ध नहीं है। ये तो दुनिया का व्यवहार है। इसका भी फल लेगा।

भक्ति पशु बन्धन नहीं काहे बूढ़ा काली धार।

मुझे पता नहीं था मैं तो दातादयाल की पूजा किया करता था। ज बनाता ये करता वो करता तो वे मुझे लिखते थे। सोच समझ काम ले।

ज्ञान पशु की क्या करूँ निन्दा, निंदया बो ग्रन्थ की लार।

ज्ञान पशु, ज्ञानी उदाहारण देता है, अहम् ब्रह्म असमी' और की दलीलें देता है। कहते हैं वह भी मंजिल पर नहीं पहुँचा।

जड़ चेतन की गांठ न खोले उरझे उरझ रहा हार।

उसने अपने जड़ चेतन की गांठ जो तुम्हारे अन्दर भी है नहीं खोली। वह जड़ चेतन क्या वस्तु है ? वह जो असली मेरा रूप है जब वह शरीर और मन या रूपों और रंगों में आ जाता है और मन के खेलों को सत्य मानता है। वह जड़ चेतन की ग्रन्थी पड़ी हुई है। और मन की फुरना व संकल्प मन का विचार और मन का विश्वास और मन के अन्दर जो कुछ प्रगट होता है। वो चेतन नहीं है माया है ए इन्सान तुझको जो कुछ मिलता है, या मिलेगा तेरा अपना ही विश्वास है। तेरा अपना ही यकीन है और तेरा अपना ही विचार है जैसी आशा वैसी बासा, जैसी करनी वैसी भरनी।

(गतांक से आगे)

परमसंत परमदयाल हुजूर पं० फकीरचन्द जी महाराज के निज घर जाने पर

श्रद्धाञ्जलि

ऐ रहमते जमाँ ऐ रहमते कर्म शाहे फकीर,
घूमती है दुनिया गिर्द तेरे होकर असीर।
अर्श छोड़ा अठारह को जानवे फर्श आ गये,
छः जरब तीन ६×३=१८ के महफूम को समझा गये।
आदमी को इन्सान बनने का गुरु सिखला दिया,
सारे जहाँ में परचय इन्सानियत का लहरा दिया।
काम अपना करके पूरा कर दिया सबको निहाल,
फर्श को कह अलविदाह अर्श में पाया बिसाल।
कैसी अकीदत दूँ मैं मालिक तू अकीदत से परे,
न तू जाहिर न तू बातिन तू इन सबसे परे।
तू नूर था नूर है और नूर ही रहेगा,
दुनिया का हर बशर तेरी तालीम का मशकूर ही रहेगा।
तू सबका था किसमें नहीं था ऐ मेरे फकीर,

तू काएनात के जर्रे जर्रे का था इक वाहद पीर।
हर बशर के दुख का होता था गुमान तुझको,
हरएक को सुखी रखने का होता था अरमान तुझको।
तेरी तरह का न आज तक अज़ल से कोई फकीर आया,
तेरी तरह का न कोई कूलामे रामशीर लाया।
चलाया चाक ऐसा किया चाक सबको,
हटाया सब तरफ से दिखाया राहे नाक सबको।
तेरी शान क्या थी शान की शान का अन्दाजा वरहा,
शान इतनी हुई कि शान को शान होने का तकाजा न रहा।
तू सच था मुजिस्म सच सचाई से पुर नूर था तू,
मिला बहुत नजदीक से सबको मगर बहुत दूर था तू।
चूमे हयात में न कर सके न की कदर तेरी,
जाने के बाद दिलो दिमाग में रहती है तसवीर तेरी।
शमा सच की जो जलाई है जलती रहेगी,
तेरी राह पर अब कुल दुनिया चलती रहेगी।
रास्ता निज घर का कर दिया साफ तूने,
गुम रही रही दूर करके कर दिया इन्साफ तू ने।
तू आया था हम सबको आजाद कर गया,
किया काम अपना और परवाज कर गया।
जज़्वा है इक यादहानी इसे पूरा करता हूँ मैं,
अपना ही दिल रखने को फूल अकीदत के पेश करता हूँ मैं।

—०—

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम		श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहाँ

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
रामदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 170

Aluwar Narsimlu Book Seller
V & P.O. Banswara
Nizamabad

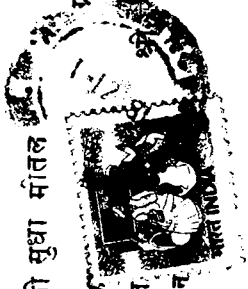

सम्पादक— श्रीमती सुधा मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशक— श्रीमती सुधा मीतल
शिव भवन, लेखराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh